

संस्थापित १८६७ ई०



आर्य मित्र



साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ३६ ● २४ अक्टूबर २०१७ कार्तिक शुक्ल पक्ष पंचमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्बत् : १६६०८५३११८

आर्य समाज चलायेगा शराब बन्दी आन्दोलन

- डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पुनः पूर्ण रूप से प्रदेश में शराब बंदी हो यह आन्दोलन पुनः आर्य समाज को पुनः करना है, क्योंकि शराब ने देश के उन मजदूरों से लेकर नौजवानों तक अपना पूरा असर डाला है, मजदूर अपनी सारी मेहनत की कमाई सब शराब पीने में लगा देते हैं नौजवान जो देश का भविष्य वह शराब पीकर अपनी सारी जिन्दगी दाव पर लगा देते हैं आर्य सामज धामपुर बिजनौर के कार्यक्रम में अपना वक्तव्य देते हुए सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एक दिव्य राष्ट्र पुरुष थे वह स्वराष्ट्र, स्वभाषा स्वसंस्कृति, के प्रबल पक्षधर थे उनका चिन्तन-मनन आध्यात्मिकता से भरा हुआ था। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के प्रेरणा स्रोत थे। किसी भी क्षेत्र की पराधीनता व्यक्ति समाज व राष्ट्र की अवनति का मुख्य कारण होती है। वर्तमान समय में महर्षि के अनुयायी बिना किसी फल की कामना के सेवा की भावना से कार्य कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द की विचार धारा की आवश्यकता हर समय हर समुदाय व व्यक्ति की होगी। आज के इस युग में तो और अधिक आवश्यकता है। देश की स्वतंत्रता से काफी पहले अपने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में महर्षि ने लिखा था कि "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है, मत-मतान्तर, अपने पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, दया और न्याय के साथ भी, विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।"

स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिवीरों के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे उनके द्वारा सन् १८७५ में स्थापित आर्य समाज की सूची में श्याम जी कृष्ण वर्मा का नाम भी था। चन्द्रशेखर आजाद महर्षि रचित "आर्याभिविनय" के एक मंत्र का जब तक रोज पाठ न कर लेते थे तब तक भोजन न ग्रहण करते थे। लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द भाई परमानन्द, लालबहादुर शास्त्री, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह आदि हजारों वीर आर्य सामज के सदस्य थे या ऋषि की विचार धारा से प्रभावित थे।

तभी तो सन् १९११ में मिस्टर ब्लण्ट ने आर्य समाज के सम्बन्ध में लिखा था कि "आर्य समाज के सिद्धान्तों में देश भक्ति की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा

समान रूप से प्राचीन भारत के गीत गाते हैं और ऐसा करके अपने अनुयायियों में राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना को जगाते हैं। इस शिक्षा के फलस्वरूप वे समझते हैं कि उनके देश का इतिहास पराभव की कहानी नहीं है। देश भक्ति और राजनीति पर्यायवाची नहीं है, किन्तु राष्ट्रीय कार्यों में रुचि या प्रवृत्ति राष्ट्रीय भावना का स्वाभाविक परिणाम है।"

आर्य सामज का जन्म ही सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए हुआ है, वह चाहे महिलाओं की शिक्षा-सम्मान की बात हो या सामाजिक अभिशाप मद्य निषेध की हो। आर्य समाज इससे पूर्व भी शराब बंदी के लिए आंदोलन कर चुका है। इस बार उ०प्र० में पूर्ण शराब बंदी के लिए आर्य समाज ने विगुल बजा दिया है। इसके लिए आर्य समाज हर सम्प्रदाय पंथ आदि को साथ लेकर पूरे प्रदेश में शराब बंदी के लिए योजना आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बन रही है।

सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह ने यह उद्बोधन आर्य समाज धामपुर बिजनौर के कार्यक्रम में कहा कि उ०प्र० में एक तरफ खुले आम शराब बिकती है दूसरी तरफ "मद्य निषेध" रूपी सफेद हाथी (विभाग) जनता को मूर्ख बनाने के लिए बना रखा है। आज अवैध शराब से सैकड़ों मौतें हो रही हैं। जिसका जिम्मेदार कौन है? हरियाणा, गुजरात व बिहार राज्यों ने शराब बंदी लागू करके लोगों को राहत दी है जबकि यहां एक मजदूर अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा शराब पीने पर लुटा देता है उसका परिवार तबाह हो जाता है। चुनावों में शराब के कारण ही फर्जी वोट व हिंसा का तांडव खुले आम होता है जिसके कारण आम आदमी वोट डालने नहीं जा पाता है। शराब व्यवसाय में भारी मुनाफे के कारण सरकार व्यवसायियों के दबाव में है उसे भारी भरकम राजस्व तो दिखाई देता है लेकिन उससे होने वाले दुष्प्रभाव, अपराध, मुआवजा, रोकथाम आदि में होने वाले व्यय नहीं दिखाई देते हैं।

यदि वर्तमान सरकार शीघ्र ही प्रदेश में



पूर्ण शराब बंदी लागू नहीं करती तो आर्य सामाज सभी लोगों के सहयोग से जनजागरण अभियान चलायेगा इसके लिए उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों तहसीलों व जनपदों के मुख्यालयों पर बुद्धि, शुद्धि यज्ञ करके जिलाधिकारियों को ज्ञापन देने की योजना पर विचार किया जायेगा और एक सशक्त योजना पुनः प्रदेश की आर्य समाजों को संघठित करके पुनः इस आन्दोलन आगे बढ़ाया जायेगा।

इस कार्यक्रम, श्री जयनारायण अरूण, कद्रपाल आर्य, जितेन्द्र आर्य, चन्द्रपाल सिंह, सुरेश चन्द्र आर्य आदि आर्य महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक 12 नवम्बर, 2017 रविवार तदनु माघ कृष्ण नवमी को प्रातः 11.00 बजे से संस्था प्रधान/का० प्रधान-डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में आर्य समाज जसवन्तनगर, इटावा में सम्पन्न होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार एवं निर्णय लिये जायेंगे। आपकी उपस्थिति अतिआवश्यक एवं प्रार्थनीय है। विषयवार एजेण्डा आपके पते पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्रेषित किया जा चुका है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

सभा मंत्री

मो० : ०६८३७४०२१६२

डॉ. धीरज सिंह

प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

समान शिक्षा का अधूरा सपना

अक्सर यह सवाल उठता है कि स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का नारा फ्रांस में ही सबसे पहले क्यों लगा? गैर-बराबरी के विरुद्ध क्रांति फ्रांस से ही क्यों प्रारम्भ हो सकी, जबकि यूरोप के दूसरे मुल्कों में स्थिति फ्रांस से कहीं अधिक बदतर थी? इन सबके पीछे एक ही कारण था और वह था फ्रांस की उत्तम शिक्षा व्यवस्था और ज्ञान का प्रसार। फ्रांस में रूसो, बालश्वर जैसे विचारकों की शिक्षा ने मानवीय अधिकार, प्रजातंत्र और समानता के आदर्श के प्रति जनता को अधिक सचेत और जागरूक बनाया। शिक्षा को लेकर भारत में भी एक लंबे समय से संघर्ष किया जाता रहा है, फिर भी यहां का समाज नहीं बदला। इस सिलसिले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के १६ अगस्त २०१५ के लिए इसकी ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। इसमें न्यायाधीश ने कहा था कि प्रदेश की स्कूली शिक्षा तभी सुधर सकती है जब मंत्रियों और अफसरों के बच्चे भी सरकारी स्कूलों में पढ़ेंगे। अदालत का आदेश था कि जो भी अफसर, मंत्री या कर्मचारी सरकारी कोष से वेतन लेते हैं उन्हें अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाना अनिवार्य होगा।

अभी वे ही बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं जो गरीब हैं। जब अधिकारियों के बच्चे भी इन स्कूलों में पढ़ेंगे तो सरकार को इन्हें बेहतर बनाना ही पड़ेगा। न्यायाधीश ने प्रदेश के मुख्य सचिव को हिदायत भी थी कि इस काम के लिए वे जो भी तरीका अपनाएं उसकी पूरी रिपोर्ट छह महीनों के भीतर जमा करें। साथ ही जो इस निर्णय का पालन नहीं करे, सरकार उसके खिलाफ दंड का प्रावधान सुनिश्चित करे। उस समय तत्कालीन सरकार से यह उम्मीद थी कि वह गैर बराबरी दूर करने वाले इस आदेश का पालन करने के लिए कोई कदम जरूर उठाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। देखना है कि योगी सरकार क्या करती है, जो राज्य की कायाकल्प कर देने का वादा कर रही है?

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की बातों में कुछ नया नहीं था। १८८२ में ज्योतिबा फुले ने इंटर आयोग को दी गई अपनी रिपोर्ट में कहा था कि शिक्षा के मामले में ब्रिटिश सरकार केवल उच्च जातियों की ही मदद करती आ रही है, जबकि सरकार की आय मुख्यतः निम्न जातियों के परिश्रम से होती है। १९११ में जब गोखले ने इम्पीरियल असेंबली के सामने मुफ्त और अनिवार्य स्कूली शिक्षा का बिल रखा तो उसका काफी विरोध हुआ था। वर्ष १९३७ में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी ने तत्कालीन कांग्रेस शासित सात प्रांतों में अनिवार्य और मुफ्त स्कूली शिक्षा लाने की पूरी कोशिश की थी, मगर असफल रहे। आजादी के बाद डॉ. भीमराव अंबेडकर ने १५ वर्ष की आयु तक मुफ्त अनिवार्य स्कूली शिक्षा को भारतीय संविधान का अंग बनाया। शिक्षा के जरिये गैर बराबरी दूर करने के लिए १९६६ में कोठारी आयोग ने 'पड़ोस स्कूल' की अवधारणा दी। अर्थात् प्रत्येक इलाके का अपना एक स्कूल की अवधारणा दी। अपना एक स्कूल होगा जिसमें उस इलाके में रहने वाले सभी लोगों के लिए यह जरूरी होगा कि वे अपने बच्चों को उसी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजेंगे जो उनके इलाके के लिए निर्धारित किया गया। प्रवेश में गरीब-अमीर, जाति, धर्म, मालिक, मजदूर, जमींदार किसान आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाएगा। १९६८ में बनी देश की पहली शिक्षा समिति ने कोठारी के विचारों का समर्थन किया। १९८६ में बनी दूसरी शिक्षा समिति और १९९२ की संशोधित समिति ने भी इसका अनुमोदन किया। जयप्रकाश नारायण ने भी कोठारी आयोग द्वारा प्रतिपादित पड़ोस स्कूल की अवधारणा के लिए आवाज उठाई। दुख की बात है कि इतना सबकुछ होने के बाद भी स्थिति बदली नहीं है। आज से १३५ बरस पहले जिस समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया था वह आज भी बरकरार है। कोई भी सरकार शिक्षा में गैर बराबरी दूर करने में सफल नहीं हो सकी है। सभी ने एक समान शिक्षा व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाने के बजाय गैर बराबरी बढ़ाने वाली नीति अपनाई है। मॉडल स्कूलों के नाम पर खास वर्गों के लिए स्कूल बनाए गए। केंद्रीय विद्यालय सैनिक स्कूल और नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गई। फीस के नाम पर लाखों रुपये वसूलने वाले प्राइवेट स्कूलों ने तो इन सभी को काफी पीछे छोड़ दिया। इन स्कूलों की फीस अब और ज्यादा समस्या बन गई है। अनगिनत संख्या में बने सरकारी स्कूल इन स्कूलों से बिल्कुल अलग हैं, जबकि इन्हीं में देश की बहुसंख्यक जनता अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भेजती है। यह एक सर्वमान्य धारणा बन चुकी है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती और विद्यार्थियों को मामूली सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं होती।

औसतन प्रत्येक स्कूल में तीन अध्यापक हैं। जो हैं उनमें कुछ ही पढ़ाने में दिलचस्पी रखते हैं। जब तक सरकार में बैठे लोग स्वयं इन कमियों का अनुभव नहीं करेंगे तब तक सरकारी स्कूलों की दशा सुधरने वाली नहीं है। आज हम फ्रांस की बात करते हैं परन्तु यदि समाज में एक समान शिक्षा व्यवस्था स्थापित करनी है तो वैदिक शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा।

— सम्पादक

गतांक से आगे

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।

सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया॥ मनु०॥

स्त्री को योग्य है कि अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराईयुक्त सब पदार्थों के उत्तम संस्कार, घर की शुद्धि और व्यय में अत्यन्त उदार न रहें, अर्थात् सब चीजें पवित्र और पाक इस प्रकार बनावें जो औषधरूप होकर शरीर वा आत्मा में रोग को न आने देवे। जो-जो व्यय हो उस का हिसाब यथावत् रखके पति आदि को सुना दिया करे। घर के नौकर चाकरों से यथायोग्य काम लेवे। घर के किसी काम को बिगड़ने न देवे।

स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या सत्यं शौचं सुभाषितम्।

विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः॥ मनु०॥

उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के रत्न, विद्या, सत्य पवित्रता, श्रेष्ठभाषण और नाना प्रकार की शिल्पविद्या अर्थात् कारीगरी सब देश तथा सब मनुष्यों से ग्रहण करे।

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥११॥

भद्रं भद्रमिति ब्रूयाद्भद्रमित्येव वा वदेत्।

शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात् केनचित्सह॥१२॥ मनु०॥

सदा प्रिय सत्य दूसरे का हितकारक बोले अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोले। अनृत अर्थात् झूठ दूसरे को प्रसन्न करने के अर्थ न बोले॥११॥ सदा भद्र अर्थात् सब के हितकारी वचन बोला करे। शुष्कवैर अर्थात् बिना अपराध किसी के साथ विरोध व विवाद न करें॥१२॥ जो-जो दूसरे का हितकर हो और बुरा भी माने तथापि कहे बिना न रहे।

पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्य पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

उद्योगपर्व-विदुरनीति०॥

हे धृतराष्ट्र! इस संसार में दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशंसक लोग बहुत हैं परन्तु सुनने में अप्रिय विदित हो और वह कल्याण करने वाला बचन हो उस का कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है। क्योंकि सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना, परोक्ष में दूसरे के गुण सदा कहना। और दुष्टों की यही रीति है कि सम्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्रकाश करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नहीं सुनता वा कहने वाला नहीं कहता तब तक मनुष्य दोषों से छूटकर गुणी नहीं हो सकता।

कभी किसी की निन्दा करे। जैसे- 'गुणेषु दोशारोपणमसूया' अर्थात् 'दोषेषु गुणारोपणमप्यसूया,' 'गुणेषु गुणारोपणं दोषेषु दोषारोपणं च स्तुतिः जो गुणों में दोष, दोषों में गुण लगाना वह निन्दा और गुणों में गुण, दोषों में दोषों का कथन करना स्तुति कहाती है। अर्थात् मिथ्याभाषण का नाम निन्दा सत्यभाषण का नाम स्तुति है।

बुद्धिवृद्धिकाण्याशु धन्यानि च हितानि च।

नित्यं शास्त्राण्यवेक्षेत निगमांश्चैव वैदिकान्॥११॥

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।

तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते॥२॥ मनु०॥

जो शीघ्र बुद्धि, धन और हित की वृद्धि करने हारे शास्त्र और वेद हैं उन को नित्य सुनें और सुनावें। ब्रह्मचर्याश्रम में पढ़े हो उन को स्त्री पुरुष नित्य विचारा और पढ़ाया करें॥११॥ क्योंकि जैसे-जैसे मनुष्य शास्त्रों को यथावत् जानता है वैसे-वैसे उस विद्या का विज्ञान बढ़ता जाता और उसी में रुचि बढ़ती रहती है॥२॥

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।

नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्॥११॥

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञश्च तर्पणम्।

होमो दैवो बलिर्भूतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥१२॥

स्वाध्यायेनार्चयेत्तर्पणं होमैर्देवान् यथाविधि।

पितृन् श्राद्धैश्च नृनन्नैर्भूतानि बलिकर्मणा॥३॥ मनु०॥

दो यज्ञ ब्रह्मचर्य में लिख आये वे अर्थात् एक वेदादि शास्त्रों को पढ़ना पढ़ना, सन्ध्योपासन, योगाभ्यास। दूसरा देवयज्ञ- विद्वानों का संग, सेवा, पवित्रता, दिव्य गुणों का धारण, दातृत्व, विद्या की उन्नति करना है, ये दोनों यज्ञ सायं प्रातः करने होते हैं।

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता॥११॥

प्रातः प्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता॥१२॥

— क्रमशः

हिन्दुत्व क्या है ?

—रणधीर शास्त्री, मेरठ

हिन्दुत्व क्या है— आजकल यह विषय चर्चा में है, सूर्यवंशी वैदिक क्षत्रियों ने हमारे देश के मूल नाम आर्यावर्त का भारतीय (भारतों का देश) ऐसा नाम रखा और चंद्रवंशी क्षत्रियों ने इसका नाम इन्दुस्थान ऐसा रखा। इसका प्रमाण प्राचीन वैदिक विश्वराष्ट्र के देशों के नाम में आया अन्त्यपद ईय अथवा स्थान में मिलता है। समयांतरे भारतईय का भारतीय हुआ और स्थान का स्तान हुआ।

भा—रत अर्थात् सूर्य की दैवी आभा के ध्यान में रत अर्थात् लगा रहने वाला। ऐसी दैवी आभा गायत्री के रूप में प्रकट हुई। भारत शब्द की इस परिभाषा के अनुसार प्राचीन वैदिक किन्तु राष्ट्र में आए देशों के नाम भारतईय अर्थात् भारतों के समान अर्थात् उसके गुणों का अनुकरण करना जैसे कि ऋषियों का देश। अति प्राचीन काल में भरत के समय हमारे देश के निवासियों को भारत कहते थे। अपनी दैवी आभा से भारत के साथ-साथ समग्र विश्व का सर्वांगीण विकास करना ही भारतीयता है।

ईरान (आर्यान) में जब प्रजातंत्र स्थापित हुआ तो उसके पहले ईरान का मुस्लिम राजकुल पहलवी कहलाता था। जब वशिष्ठ ऋषि की कामधेनु गाय को विश्वामित्र जबरदस्ती से ले जाने लगे तो पहलवी वंश के क्षत्रियों ने कामधेनु का रक्षण किया था। ईरान के भूतपूर्व पहलवी वंश के शासक रजाशाह और उनसे पहले के शासकों की उपाधि पद में वे राजा आर्य मिहिर कहलाते थे। जिसका वैदिक अर्थ सूर्य जैसा तेजस्वी होता है।

जब वैदिक सम्राट दुष्यंत-शकुन्तला पुत्र भरत विश्व सम्राट बने तब समग्र विश्व का नाम भारत वर्ष पड़ा था। क्योंकि उस समय पृथ्वी पर भारत का शासन था। भारत वर्ष शब्द में आया वर्ष शब्द समग्र गोल पृथ्वी का निर्देशक है। अंग्रेजी शब्द यूनि अर्थात् एक (संयुक्त) और वर्ष अर्थात् गोल पृथ्वी।

वैदिक चंद्रवंशी क्षत्रियों ने चंद्रमा की बदलती कलाओं की तरह हमारे देश का योजनाबद्ध विकास किया था। इस प्रकार चंद्रवंशी क्षत्रियों ने अपने इष्ट देव चंद्रमा पर से हमारे देश का नाम इन्दुस्थान ऐसा रखा था।

सिन्धु, शतद्री, विपासा, पुरुष्णी, अस्किनी, वितस्ता और सरस्वती इन सात नदियों द्वारा सिंचित प्रदेश को सप्तसिन्धु बताया जाता है। इसमें शिवालिक की पहाड़ी के नीचे आया दक्षिण की तरफ का थोड़ा पंजाब प्रांत का मैदानी भाग, हिमाचल प्रदेश तथा विभाजन पहले का कश्मीर का बड़ा भाग का इसमें समावेश है। उपरोक्त नदियों को आज सिन्धु, सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम और सरस्वती कहा जाता है।

ऋग्वेद तथा अन्य वेदों में अनेक स्थलों पर सप्तसिन्धु पद का प्रयोग हुआ है। इससे कुछ लोगों ने सप्तसिन्धु प्रदेश की कल्पना का आधार वेदों को मन लिया। परन्तु सप्त और सिन्धु ये दो पद हैं। वे मात्र नदियों का निर्देश करते हैं। इन दो पदों के आधार पर किसी प्रदेश की कल्पना की जाए तो ये दोनों पर अपने मुख्य अर्थों को छोड़कर इससे भिन्न तीसरे अर्थ को ग्रहण कर लेते हैं। सिन्धु यह नदी वाचक सिन्धु पद का बहुवचनान्त रूप है। वेद में नदी सामान्य का नाम सिन्धु है सप्त पद के साथ दूसरे अनेक पदों का समास होकर एक नाम के रूप में उसका प्रयोग हुआ है। परन्तु सप्त और सिन्धु के

दो पद समास होकर एक नाम के रूप में वेदों में कहीं नहीं।

पहले के समय में सिन्धु नदी का नाम सिन्धु था। किन्तु ऐसा कहा जाता है कि जब ईरानी शासकों का साम्राज्य सिन्धु नदी के पश्चिमी किनारे तक फैला तब अपने कब्जे में आए प्रदेश के ऊपर ईरानी शासकों ने अपना आधिपत्य (कब्जा) स्थापित करने के हेतु से सिन्धु का नया अर्थ दो प्रदेशों को अलग करने के रूप में करके सिन्धु का सिन्धु ऐसा नाम रखा। जो इतिहास में गलती हुई है। उसे सुधारने का कोई प्रयास नहीं हुआ। दूसरा मुद्दा यह है कि सप्त सिन्धु का अर्थ है सात नदियां तो उपरोक्त सात नदियों में एक का नाम सिन्धु कैसे हो सकता है। वह नाम सिन्धु होना चाहिए।

भारतीय वैदिक साहित्य में प्रदेश वाचक के रूप में सप्त सिन्धु भले ही न मिले परन्तु पारसियों के धर्मग्रन्थ अवेस्ता की पहली पुस्तक वेन्दीदाद के प्रथम फर्गद (अध्याय) की उन्नीसवीं गाथा में उल्लेख है कि जिस पंद्रहवें सबसे अच्छे प्रदेश को मैंने उत्पन्न किया वह हप्तहिन्दू (सप्तसिन्धु) है।

सिन्धु यह नदी वाचक सिन्धु को बहुवचनान्त होने से अरबों ने सिन्धु में से हिन्दु किया और यह हिन्दु व प्रदेश वाचक हिन्दू पद का बहुवचनान्त होने से अरबी लेखक भारतीयों को हिन्दू लिखे थे। क्योंकि १४०० वर्ष पूर्व सभी भारतीय हिन्दू थे।

ऐसा कहा जाता है कि सिन्धु शब्द का ही अपभ्रंश हिन्दू हुआ यह प्रचलित धारणा गलत भी हो सकती है क्योंकि जो ऐसा होता तो केवल सिन्धु प्रांत का ही नाम हिन्दू होता। परन्तु महाभारत में तो सिन्धु प्रांत का उल्लेख सिन्धु सौबीर नाम से हुआ है।

अलबरूनी के ग्रंथ से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सिन्धु और हिन्दू ये दो अलग-अलग उच्चारण हैं क्योंकि वे आगे लिखते हैं कि उनके प्रदेश में से यदि सिन्धु प्रांत में पहुंचना हो तो हिमरोज उर्फ सीजिस्थान होकर आना पड़ता है परन्तु जो हिन्दू (अर्थात् हिन्दुव) में जाना हो तो काबुल होकर जाना पड़ता है।

उपरोक्त विवरण पर से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अरब और ईरानी लोगों ने हिन्दू नाम नहीं ईरानी लोगों ने हिन्दू नाम नहीं दिया। इससे ऐसा कहना योग्य (ठीक) नहीं कि उन्होंने तिरस्कार भाव से यह शब्द भारत को थोप दिया। इस्लामी साहित्य में भी हिन्दू हिन्दुस्तान जन्त निशा अर्थात् हिन्दुस्तान स्वर्ग समान देश है। तो प्रश्न होता है कि हिन्दू शब्द कहाँ से आया?

चीनी यात्री ह्यु ऐन्त सांग ने अपने भारत प्रवास के वर्णन में लिखा है कि भारत देश का नाम इन्तु (चीनी भाषा में चन्द्रमा के अनेक नामों में एक नाम इन्तु भी है) इसलिए पड़ा कि इस प्रदेश के विद्वानों ने अपने शीतल, धवल (शुभ्र) ज्ञान प्रकाश से चन्द्रमा की तरह समग्र विश्व में शीतल उजाला फैसला है। उक्त विवरण पर से स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि हमारे देश के चन्द्रवंशी क्षत्रियों ने इन्दुस्थान ऐसा नाम रखा था। और अरब ईरानी लोगों ने इन्दुस्थान का ही हिन्दुस्थान ऐसा उच्चारण किया था।

मुस्लिम मुगल शासकों ने भी इस देश को हिन्दुस्तान कहने में गौरव अनुभव किया था। सर्वोच्च न्यायालय की खण्डपीठ के निर्णय में

हिन्दुत्व को राष्ट्रवाचक और भारतीयता का पर्यायवाची माना है।

हिन्दुत्व शब्द भारत के उस व्यक्ति का प्रतीक और पर्यायवाची है जो हजारों वर्ष से आसेतु हिमालय भारत के रूप में विकसित हुआ है। हिन्दुत्व आज विकसित होकर भारत का अपना स्वाभाविक और अविभाज्य विचार राष्ट्र जीवन और चरित्र को बोध करने वाला शब्द बन गया है।

भारतीय संविधान की मूल परत में राम, कृष्ण और नटराज के चित्र हैं। ऐसे २२ चित्रों में वेदकालीन गुरुकुल आश्रमों, भगीरथ की तपस्या, गंगावतरण, राम का लंकाविजय, महाभारत पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया गीता का उपदेश, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, महारानी लक्ष्मीबाई, नागाधिराज हिमालय, विशाल हिन्द महासागर, आदि के चित्र आलेखित हैं। भारतीय संस्कृति के द्योतक ऐसे इन चित्रों के सामने किसी ने भी विरोध व्यक्त नहीं किया था। भारतीय संस्कृति के इस सत्य को तोड़ना-मरोड़ना यह हमारे राष्ट्र के लिए बौद्धिक आत्मघात साबित होगा। समयांतरे यह समझना मुश्किल हो जाएगा कि भारत का भव्य भूतकाल कैसा था? वर्तमान में उसका क्या प्रभाव कैसा पड़ेगा। जो लोग अपने पूर्वजों को उचित सम्मान न देते हैं उनका पतन निश्चित ही है क्योंकि पूर्वजों के गौरवपूर्ण इतिहास और उनके उपदेश से मनुष्य को उसके वर्तमान और भावी जीवन में प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलता है।

भारतीय ऋषि-मुनियों ने किसी जाति विशेष को संबोधित करके नहीं लिखा परन्तु उन्होंने मानव मात्र के कल्याण (भलाई) के लिए लिखा है। हिन्दुत्व की वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने जो कुटिल नीति अपनाई उसी का दुष्परिणाम है कि आज हिन्दुत्व पर आपत्ति प्रकट की जा रही है।

हिन्दुत्व में कोई नेता, कोई ग्रंथ या कर्मकाण्ड किसी पर थोपा नहीं जाता। आस्तिक से नास्तिक तक किसी भी प्रकार की अध्यात्मवादी या भौतिकवादी विचारधारा पर हिन्दुत्व में कोई रोक-टोक नहीं है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण मानसिक और वैचारिक स्वतंत्रता दी गई है। किन्तु आचरण पर अंकुश है मनमाना आचरण कर दूसरे पर दबाव या किसी को सताना या समाज में आयोग्य आदर्श निर्माण करना हिन्दुत्व में विहित नहीं है। अर्थात् मान्य नहीं है।

कर्तव्यपालन, सेवाभाव, त्याग और परोपकार यह हिन्दु व्यवहार की प्रमुख बातें हैं। यहां हिन्दू शब्द राष्ट्रीयता और मानवता का द्योतक है।

हिन्दुत्व की सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना के अनुरूप मानवाधिकार की व्यापक परिभाषा यही हो सकती है कि सभी भारतीयों के जीवन में बिना किसी भेद-भाव के उनके भौतिक विकास के साथ-साथ आत्मिक उत्कर्ष का प्रावधान भी बिना किसी अवरोध के चलता रहे। हिन्दुत्व की भारतीयों के जीवन में सर्वांगीण विकास की भावना की उपेक्षा कर भारतीयों को साम्प्रदायिक आधार पर बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक ऐसे दो भाग में विभाजित कर राजनीति करने वाले किस प्रकार अपने आपको बिन साम्प्रदायिक कह सकते हैं अतः भारतीयता का पर्यायवाची शब्द हिन्दुत्व है। और हिन्दुत्व की विचार धारा बिना साम्प्रदायिक है।

नाम के आगे उपजाति वाचक शब्द मानव समाज को बांट रहा है

उपजातिवाचक शब्द हटाने में आगे आएं

— पं० उम्मेद सिंह विशारद

वैदिक प्रचारक

आत्मा की आवाज़— ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि में सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों की प्रथम प्रथक रचना की है जो जन्म से मृत्यु तक आकृतियां एक जैसी बनी रहती हैं। तथा उन्हीं मेंसे एक मनुष्य जाति का निर्माण भी किया है, और जीवित रहने के साधन सबको एक समान बिना भेद भाव के उपलब्ध कराये है। अर्थात् मनुष्य की एक जाति मनुष्य जाति बनाई है।

मनुष्य के पूर्वजों ने मनुष्यों की योग्यतानुसार गुण कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बिना भेदभाव के बनाई थी। कालान्तर में वर्ण व्यवस्था कल्पित जाति व्यवस्था कायम करके मनुष्य जाति को बांट दिया है। आज का लेख इस आवश्यक विषय पर प्रस्तुत कर रहा हूँ निष्पक्ष होकर विचार करें।

वर्ण व्यवस्था कर्म से थी तथा कथित जाति से नहीं थी— मानव पूर्व जन्मों के संस्कारों के लेकर पैदा होता है और वर्तमान में संस्कार व स्वभाव से एक विशेष गुण वाला हो जाता है, और उस गुण कर्म को वर्ण “संज्ञा” दी जाति है। वर्ण अधिक ज्ञान विज्ञान प्राप्त करके बदले जा सकते हैं, तथा बदल गये हैं। हमारे ग्रन्थों में इसके अनेक प्रमाण हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों को एक समान पैदा किया है। वैदिक धर्म व वेदों में व्यवस्था थी कि जो जिस-जिस गुणों को लेकर पैदा होता है, राज्य व्यवस्था से उसको वही वर्ण मिलता था। जैसे एक पिता की चार सन्तानें हुई और उनमें से एक पढ़ने में तीव्र बुद्धि उसको ब्राह्मण, दूसरा लड़ने में वीरता उसको क्षत्रिय तीसरा व्यापार में तीव्र बुद्धि उसको वैश्य चतुर्थ सन्तान जो पढ़ने व समझने से मन्द बुद्धि है, उसको शूद्र का वर्ण दिया जाता था। शूद्र घर का कार्य व भोजन आदि बनाया करता था, किन्तु भेदभाव नहीं होता था। इस प्रकार वर्ण गुण कर्मानुसार बदलते रहते थे।

नाम के आगे प्रचलित उपजातिवाचक शब्द की समीक्षा— महाभारत युद्ध के बाद जब वैदिक विद्वान समाप्त हो गये, तब वर्ण शंकर सन्तानें पैदा होने लगी, और सामाजिक गुण कर्म वर्ण व्यवस्था धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। और गुण कर्म के कार्यों को जाति व्यवस्था बनने लगी। और मानव समाज में ऊंच नीच और छुआछूत का व्यवहार होन लगा। सत्योपदेशक ब्रह्मणों से संसर्ग न रहने से लोक अव्यवस्था फैल गई। मानव समाज में मूल में पोन्द्रक, ओड, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पद्दव, चीन, किरात, दरद, खश, आदि के नाम से प्रचलित हुई और संसार में जहां भी बसी वही अपना आधिपत्य जमा कर बैठ गई। जैसे द्रविड भारत के दक्षिण में यवन, शक, पारद, पश्चिम में जाकर अरब राष्ट्रों को बनाया, इसके लिये प्रमाण रूप में ईरान के शाह अपने नाम से पूर्व (आर्य मिहर) शब्द लिखते हैं, जिसका अर्थ है आर्य कुल का सूर्य।

इस प्रकार नागा भारत के असम क्षेत्र में जा बसे और शेष विश्व में जहाँ-तहाँ आबाद हो गये।

वह एक युग था। विश्व के हर कोने में आर्य निवास करते थे, और भारत उनका केन्द्र था। स्वार्थी लोगों ने द्रविड और आर्यों की अलग-अलग जाति बताकर सदा के लिए भारतीयों के दिलों में दरारे डाल दी। भारत में प्रचलित जातियों का मूल द्रविड और आर्य है इसे ही सब उपजाति फैली हुई है। नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाने से ऊंच नीच का व्यर्थ भव पनपता है, जबकि, उपजाति का कोई निश्चित आधार नहीं है न ही प्राचीन इतिहास मिलता है। जाति वाचक शब्द लगाने वाले मनुष्य को यह भी मालूम नहीं होता कि इस उपजाति नाम का मूल क्या है, और कैसे नाम पड़ा बस, पीढ़ी दर पीढ़ी उपनाम लगाना परम्परा बन गई है। गम्भीरता से विचार करें।

जातिवाद से हानियां— उच्च जाति मानने से भेदभाव, ऊंच नीच व्यवहार से भारत वर्ष में हानियां हुई हैं। तथा कथित छोटी जाति का उच्च जाति वालों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी बधुवा की तरह शोषण किया गया, और शोषित वर्ग को प्रत्येक अधिकारों से वंचित किया गया, इससे दुःखी होकर सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए विधर्मी बन गये। ईसाई व मुसलमान समुदाय में सम्मिलित हो गये। फल स्वरूप भारत वर्ष में आज भी करोड़ों ईसाई व मुसलमानों के पूर्वज हिन्दु थे। आज के इस वैज्ञानिक वातावरण में भी जाति पाति, छुआ छूत का चलन कैसर बना हुआ है।

वर्तमान युग में जाति पाति छुआ छूत का कोई औचित्य नहीं है— आज तक जिन व्यवसाय के कारण भिन्न-भिन्न जाति जैसे लोहार, टमटा, मिस्त्री, औजी आज तक जिन व्यवसाय के कारण जाता था। किन्तु अब उनके व्यवसाय को उच्च वर्ग के लोग करने लगे हैं। अब उच्च वर्ग को भेदभाव समाप्त करने में आगे आना चाहिए। इस विषय पर उदारण देना प्रासंगिक होगा। जो इस प्रकार से है। एक दिन रेल के डिब्बे में खादी की टोपी व धोती पहने सामज सुधारक जे०पी० कृपलानी जी ने अपना खाने का टिफन खोला आसैर शिष्टाचार बस उन तिलक धारी पंडित जी से भी भोजन करने को कहा, किन्तु पंडित जी ने कहा महाशय आपकी जाति क्या है। कृपलानी जी मुस्कराने लगे, और कुछ सोच कर बोले पंडित जी मेरी एक जाति हो तो बताऊं। पंडित बोले क्या मतलब है। कृपलानी जी मुस्कराकर बोले प्रातः जब शौचालय जाता हूँ और अपने को साफ करता हूँ उस समय भंगी बन जाता हूँ, दाढ़ी बनाते समय वैश्य, विद्यालय पढ़ाते समय ब्राह्मण, किसी पर अन्याय को बचाते समय क्षत्रिय बन जाता हूँ। अब आप ही बताइये मैं अपनी कौन सी जाति बताऊं। किन्तु ईश्वर ने मनुष्य जाति का बनाया है। इसलिए मेरी जाति मनुष्य हैं अब आप ही विचार करें।

ईश्वर कृत जातियां— ईश्वर ने करोड़ों प्राणियों की रचना भिन्न-भिन्न शरीरों में रची हैं, जो शरीर जिस प्राणी को दिया है वह जन्म से मृत्यु तक बना रहता है जैसे, गाय, भैंस, बकरी, कबूतर, घोड़ा,

गधा, सांप, पशु-पशु पक्षी, बिच्छु आदि शरीरों की अलग-अलग रचना की है। वैसे ही एक जाति मनुष्य की भी बनाई है। जाति उसको कहते हैं, जो जन्म से मृत्यु तक जाति नहीं है। किन्तु शास्त्रों में मानव जाति में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था बनाई है, किन्तु भेदभाव नहीं बनाया जो हम पहले पैराग्राफ में स्पष्ट कर चुके हैं।

आर्य समाज संगठन समाज सुधारक संस्था से निवेदन— आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कथित जाति व्यवस्था को मानव जाति में फूट डालने वाला बनाया है। और वर्ण व्यवस्था पर बल दिया है। आज आर्य समाज को बने करीब १४२ वर्ष हो गये हैं, किन्तु आर्य सदस्य, व आर्य नेतृत्व नेतागण, अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाते जा रहे हैं। जो जाति व्यवस्था को और मजबूत कर रहा है। यदि आर्य समाज संगठन से जुड़े आर्य अपने नाम के आगे जाति वाचक शब्द हटाने में आगे आये तो मानव समाज का बहुत बड़ा सन्देश जायेगा।

भारतीय हिन्दुओं को जागना ही होगा—

१. भारत की गुलामी का कारण एक जातिवाद द्वारा आपसकी फूट व अलगाववाद व राष्ट्र की उपेक्षा का कारण रहा है। फिर भी हम भारतीय चेत नहीं रहे हैं।
२. भारत वर्ष में करीब २१ करोड़ मुसलमान व ईसाई हैं, जिनमें इनके पूर्वज अधिकांश हिन्दु थे। यही अवस्था रही तो कालान्तर में हिन्दु अपने ही देश में अल्प संख्यक हो सकते हैं। फिर भी चेत नहीं रहे हैं।
३. जातिवाद की बीमारी का लाइलाज का कारण वर्तमान राजनीति भी बनी हुई है। जो वोट बैंक के लालच में दिनों-दिन बढ़ रही है। फिर भी हम चेतन नहीं रहे हैं।
४. हिन्दुओं के धर्मों में पाखण्डी धर्म सम्प्रदाय भारत में दिनों-दिन बढ़ रहे हैं और इनके कारनाम हमारे सामने हैं। फिर भी हम चेत नहीं रहे हैं।
५. ईश्वर ने मानव समुदाय की सुव्यवस्था हेतु वेदों का ज्ञान दिया था, और मानव की सुख शान्ति का मार्ग बताया था, किन्तु भारत में धर्म निपेक्ष कानून के प्रभाव से बुद्धिजीवी व समाज सुधारक, वर्ग भी धर्म के नाम पर अनेक मत मतान्तरों को पल्लवित होते देखकर भी असहाय होकर रह गये हैं। हम अपने ही देश में धर्म सापेक्ष के बजाय धर्म निपेक्ष वातावरण पर चिन्तित नहीं हो रहे हैं, चेत नहीं रहे हैं।

नोट — मेरे लेख आर्य पत्रिकाओं के आतिरिक्त अन्य पत्रिकाओं में भी छपते रहें हैं और प्रबुद्ध पाठकों द्वारा दूरभाष पर समर्थन मिलता रहता है इस लेख पर भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

मो०: ६४११५१२०१६

मोबाइल गेम छीन रहा है, बच्चों का बचपन

— नरेश आर्य

पता नहीं कि आपने गौर किया कि नहीं, पिछले दिनों एक बेहद चिंताजनक खबर आयी, मुंबई में १४ साल के लड़के ने अपने घर की सातवीं मंजिल से कूद कर आत्महत्या कर ली, यह लड़का ऑनलाइन गेम 'ब्लू व्हेल' का एडिक्ट था और इसी गेम के प्रभाव में आकर उसने आत्महत्या कर ली, भारत में आत्महत्या की यह अपनी तरह की पहली घटना है, वह लड़का अंधेरी के एक नामी गिरामी स्कूल का छात्र था और ६वीं कक्षा का विद्यार्थी था, लड़के ने पहले छत पर चलते हुए सेल्फी ली और उसके बाद छत से नीचे छलांग लगा दी, मौके पर ही मौत हो गयी, बच्चा ऑनलाइन गेम के कारण आत्महत्या कर ले, यह हम सभी के लिए खतरे की घंटी है।

ब्लू व्हेल गेम के बारे में जो खबरें छपीं हैं, वे चौंकाने वाली हैं, ब्लू व्हेल ऐ अंडरग्राउण्ड गेम है और इस गेम में खिलाड़ी को ५० टास्क दिये जाते हैं जिनमें से आखिरी टास्क आत्महत्या का होता है, गेम में देर रात अकेले कमरे में कोई डरावनी फिल्म देखना, हाथ पर ब्लेड से व्हेल की आकृति बनाना जैसे कई विचित्र टास्क शामिल होते हैं।

यह गेम युवाओं में लोकप्रिय है और पता नहीं कि इममें कितनी सच्चाई है कि रूस में इस

गेम के शिकार १०० से ज्यादा युवा हो चुके हैं, दुनिया में ऐसी अनेक कंपनियां हैं, जो केवल युवाओं के लिए गेम ही बनाती हैं, बच्चे दिन रात इन्हीं गेम में उलझे रहते हैं, बेगाने हो जाते हैं, इसमें बच्चों का कसूर नहीं, माता पिता भी दोषी हैं, मां बाप को लगता है कि वे बच्चों को संभालने के आसान तरीके सीख गये हैं, दो ढाई साल की उम्र के बच्चे को कहानी सुनाने की बजाय मोबाइल पकड़ा दिया जाता है और जल्द ही उन्हें इसकी लत लग जाती है। हाल में दिल्ली में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया। सोलह साल के एक बच्चे में वीडियो गेम के एडिक्शन इतना बढ़ गया कि उसे अस्पताल में भरती कराना पड़ा, एडिक्शन के कारण यह बच्चा स्कूल में फिसड्डी होता जा रहा था। खेलकूद बंद होने और घर से बाहर न निकलने के कारण छह महीनों में इसका वजन लगभग १० किलो बढ़ गया था।

साथ ही यह बच्चा आक्रामक हो गया था, जब बच्चे के मां पर भी आक्रामक होने की घटना सामने आयी तो इसे अस्पताल में भरती कराना पड़ा, यह घटना सभी माता पिता के लिए चेतावनी है, तत्काल बच्चों से संवाद स्थापित करें और मोबाइल को नियंत्रित करें अन्यथा परिस्थियां हाथ से निकल जाने का खतरा है।

यह जान लीजिए कि टेकनालॉजी दोतरफा तलवार है, एक ओर जहां यह वरदान है तो दूसरी ओर मारक भी है, यह समस्या केवल

भारत की ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की है, सभी देश इससे जूझ रहे हैं, कई देशों ने इस दिश में कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। अभिभावकों के दबाव के बाद इंटरनेट की जानी-मानी चीनी कंपनी टेनसेंट ने किंग ऑफ ग्लोरी जैसे अपने लोकप्रिय खेल के लिए समय निर्धारित कर दिया है। १२ साल से कम उम्र के बच्चे दिन में केवल एक घंटे तक लॉग इन कर पाते हैं। बड़े बच्चे केवल दो घंटे गेम खेल सकते हैं। साथ ही बच्चों के उम्र के दावे की जांच की भी पुख्ता व्यवस्था की गयी है। किंग ऑफ ग्लोरी का दावा है कि दुनियाभर में रोजाना लगभग ५ करोड़ युवा इसको खेलते हैं, बच्चों में इनकी लत पड़ने की शिकायतें लगातार सामने आ रही थीं।

ऐसी भी शिकायतें थीं कि बच्चों ने इस खेल के लिए चोरी से माता-पिता के क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल किया। बाद में जब लंबा चौड़ा बिल अया तो इसका पता लगा, दक्षिण कोरिया में तो रात १२ बजे से सुबह ६ बजे तक १६ साल से कम के बच्चों के ऑनलाइन खेल पर प्रतिबंध है। यह प्रतिबंध वर्ष २०११ से ही लागू है। जापान में तो जब बच्चे जरूरत से ज्यादा समय किसी गेम पर बिताते हैं तो कम्प्यूटर पर अपने आप चेतावनी सामने आ जाती है। लेकिन भारत में अब तक इस दिशा में कोई विचार नहीं हुआ है।

थोड़ा करीब से देखें तो पायेंगे कि आज के बच्चे बदल चुके हैं। मोबाइल और इंटरनेट ने बच्चों का बचपन छीन लिया है। उन्हें टेकनालॉजी का इडिक्शन होता जा रहा है। वे घर के किसी अंधेरे कमरे में हर वक्त मोबाइल अथवा कम्प्यूटर में उलझे रहते हैं। उनकी बातचीत, आचान-व्यवहार सब बदल गया है, वे बेगाने हो गये हैं, आपके बच्चे के सोने, पढ़ने के समय, हावभाव और खानपान सब बदल चुका है, हम इसको ले कर आंखें मूंदे हैं। बच्चा देर रात तक जगता है। दाल रोटी, और परांठे सब्जी के बजाय उसे मैगी, मोमो, बर्गर, और पिज्जा प्रिय है, इसे स्वीकारना होगा, कुछ समय पहले मुझे प्रभात खबर के बचपन बचाओ अभिदान के तहत बच्चों से संवाद का मौका मिला, मैंने पाया कि बच्चों में माता पिता को लेकर अविश्वास का भाव था।

अधिकांश बच्चें परिवार की मौजूदा व्यवस्था से संतुष्ट नहीं थे, उन्होंने सवाल उठाये कि माता-पिता उनकी तुलना दूसरे बच्चों से करते हैं, वे अपनी सोच बच्चों पर क्यों थोपते हैं, बच्चों पर हरदम शक क्यों किया जाता है। माता पिता उनके कैरियर का फैसला क्यों करते हैं आदि-आदि।

हमें समझना होगा कि वह व्हाट्सएप पीढ़ी है, यह बात नहीं करती, मैसेज भेजती है, लड़के लड़कियां दिन रात चैट करते रहते हैं, यह जान लीजिए कि टेकनालॉजी की ताकत इतनी है कि उसके प्रभाव से कोई भी मुक्त नहीं रह सकता।

प्रेरक प्रसंग

सच्ची सेवा

— आदित्य कुमार

बात मथुरा नगरी की है। ब्रह्मचारी उपगुप्त मार्ग पर कहीं जा रहे थे। चाल मस्त और मुख पर ब्रह्मचर्य का तेज प्रदीप्त था। यौवन की छटा निराली थी। मथुरा की प्रसिद्ध नर्तकी वासवदत्ता ने, जो अपने मकान की छत पर उस समय बाल सँवार रही थी। इस युवा सन्त को देखा और उसकी आँखें इस मन-मोहक भिक्षु पर गड़ गयी। वह सोचने लगी कि युवक तो मैंने बहुत देखे हैं परन्तु ऐसा सुन्दर नहीं। ऐसा लगता है कि विश्व का सब सौन्दर्य इसी युवक को प्राप्त हो गया हो। इस निराले आकर्षण से वह आकर्षित हो गई। वह ऊपर से नीचे मार्ग में उतर आयी और उपगुप्त के सामने खड़ी हो गई।

“भन्ते! क्या तुम मुझे देख रहे हो?” वह मीठे स्वर में बोली। “हाँ, देख रहा हूँ।” गुप्त बोले। “क्या सामने वाले महल को भी देख रहे हो?” वह बोली। “क्यों नहीं?” उपगुप्त ने दोहराया।

“यह धन से व अन्य ऐश्वर्यों से भरपूर है।” आज से यह महल, सम्पत्ति और मैं स्वयं तुम्हारी हो चुके। अब महल में चलने की कृपा कीजिये।”

“देवी कभी मैं अवश्य आऊँगा।” यह कहकर उपगुप्त चला गया।

वासवदत्ता करने लगी, फिर दो-एक दिनों में आ ही जायेगा। लेकिन चिरकाल तक वह न लौटा। कुछ दिनों बाद वासवदत्ता को कुष्ठ रोग लग गया। क्योंकि वह पेशेवर वैश्या थी। रात दिन भोगों में लिप्त रहती थी। उसके प्रेमियों ने उसे महल से धक्के मारकर बाहर निकाल दिया और उसके सब वैभव पर अधिकार कर बैठे। वासवदत्ता दर-दर की ठोकरें खाने लगी। एक दिन वह मार्ग के किनारे पड़ी घावों के दर्द के मारे चीख रही थी। सामने आकर किसी ने कहा— “देवी! मैं आ गया हूँ।”

वासवदत्ता ने उसे पहचान लिया। वह बोली ‘अब क्या करोगे? अब मेरे पास कुछ भी तो नहीं बचा है मेरी सुन्दरता व जवानी भी चली गई।’

उपगुप्त बोले—“देवी! मुझे तुम्हारे ऐश्वर्य और जवानी कुछ भी नहीं चाहिए थे। मुझे धन आदि की भूख नहीं है। यदि इन सब की चाह होती तो मैं घरबार त्याग कर भिक्षु धर्म क्यों अपनाता? अब तुम्हें रोग ने आ घेरा है। तुम्हारे मित्र तुम्हें त्याग कर चले गये। मैं अब तुम्हारी पट्टी करूँगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक शांति और शिक्षा

सोमेन्द्र सिंह

शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दिक्काल अद्य अवच्छिन्न अनन्त चिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकम आनाय नमः शान्ताय तेजसे॥

सर्वप्रथम कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए शान्त तेज रूप वाले परम पिता परमात्मा को नमस्कार करता हूँ ईश्वर को उनके ग्रंथों में शान्त स्वरूप वाला कहा गया है तथा आध्यात्मवाद, निर्वाण, मोक्ष में सभी शान्ति के परिचायक हैं। वर्तमान युग में भौतिकवाद का वर्चस्व है। जिसमें जिन्दगी द्रुत गति के साथ दौड़ रही है भौतिक दृष्टि से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने एक शान्तिक एवं आत्यन्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र को विकसित किया वही शान्तिशास्त्र कहलाता है। आज अमेरिका, चीन, फ्रांस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत सभी देशों में शान्ति की सम्भावना समाप्त हो रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की कार्यकारिणी सभा बुलाई गई। इस सभा में यह निर्णय लिया गया कि २१वीं शताब्दी के लिए नई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जाये। यह रूपरेखा आगे चलकर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा नामक शीर्षक से दिसम्बर २००५ में प्रकाशित हुई। एन०सी०एफ० ने २१वीं सदी को भौतिकवाद की संज्ञा दी। जिसमें विकास, नवीनीकरण आदि का वर्चस्व दिखाई देता है परन्तु कहीं ना कहीं शान्ति का अभाव दिखाई दिया। इसलिए एन०सी०एफ० ने शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया। वर्तमान में वैश्विक, राष्ट्रीय एवं स्थानीय, प्रत्येक स्तर पर हिंसा का बोल बाला है। अतः समाज में शान्ति

स्थापित करने में शिक्षा के महत्व को देखते हुए छात्र छात्राओं को शान्ति शिक्षा दी जानी आवश्यक है। शान्ति शिक्षा इस प्रकार दी जानी चाहिए जिससे छात्र-छात्राओं में शान्ति के प्रति अनुराग पैदा हो उनमें सहनशक्ति, न्यायप्रियता और आपसी समझ बढ़े तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास हो इस हेतु महापुरुषों की जीवनी एवं कहानी आदि का श्रवण तथा परिचर्या आयोजित की जा सकें।

शान्तिया आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः। अर्थात् शान्ति के द्वारा ही प्राणी स्वयं का आत्मसाक्षात्कार कर सकता है। नैतिकता और वैश्विक शांति के लिए मूल्य शिक्षा विद्या धनम् सर्वधनम् प्रधानम्। शान्ति धनम् सर्वधनम् प्रधानम्॥ शिक्षा से शान्ति सर्वोपरि कहने को तो शिक्षा से बड़ा अर्थात् विद्या से बड़ा कोई धन नहीं होता। परन्तु आज शान्ति के अभाव में आप किसी भी वस्तु की कल्पना नहीं कर सकते। शान्ति धनम् सर्वधनम् प्रधानम्

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ।

दृष्टे साआपार्था चेन्नैकान्तत्यन्ततोअ भावात्॥

भौतिक दृष्टि से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने एक शान्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र को विकसित किया वहीं शान्तिशास्त्र कहलाता है—

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थ परित्यज्य ये

सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थारोधेन ये।

तेअमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ये निघ्नन्ति निरर्थक परहितं ते के न जानीमहे॥

यदि हमारे पास दुनिया का पूरा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है। परन्तु शान्ति नहीं है, तो हम भी आम आदमी की तरह ही हैं। संसार में मनुष्यों द्वारा जितने भी कार्य अथवा उद्यम किये जा रहे हैं। सबका एक ही उद्देश्य है शान्ति। सबसे पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि शान्ति क्या है। शान्ति का केवल अर्थ यह नहीं कि केवल मुख से चुप रहे

अपितु मन का चुप रहना ही सच्ची सुख शान्ति का आधार है। कहते हैं कि जहाँ शान्ति है वहाँ सुख है, अर्थात् सुख का शान्ति से गहरा नाता है। लड़ाई दुःख और लालच को भग्न करने के लिए शान्ति सशक्त औजार है। कई लोग कहते हैं कि बिना इसके शान्ति नहीं हो सकती। इसके साथ ही भौतिक सुख साधनों तथा अन्य संसाधनों से शान्ति होगी यह कहना भी गलत है। यदि इससे शान्ति हो जाती तो हम मंदिर आदि के चक्कर नहीं लगाते। धन दौलत और संपदा से संसाधन खरीदे जा सकते हैं, परन्तु शान्ति नहीं। हम यही सोचते रह जाते हैं, कि यह कर लूंगा तो शान्ति मिल जायेगी। आवश्यकताओं को पूरा करते-करते पूरा समय निकल जाता है। और न तो शान्ति मिलती है और न ही खुशी।

अर्थात् संसार में प्राणी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए दूसरे की शान्ति को भग्न करने में जरा सी देर नहीं लगाता। खुशहाल परिवारिक जीवन के लिए जरूरी है कि पहले परिवार में शान्ति रहे। जहाँ शान्ति है वहाँ विकास है। जहाँ विकास है वहाँ सुख है, इसलिए अमूल्य शान्ति के लिए सबसे पहले हमें अपने आप को देखना होगा। अपने बारे में जानना होगा। मैं कौन हूँ कहां से आया हूँ और हमारे अन्दर कौन कौन सी शक्तियाँ हैं, जो हम अपने अन्दर ही प्राप्त कर सकते हैं। शान्ति का सागर परमात्मा है। जब हमारे अन्दर शान्ति आयेगी तो हमारा विकास होगा। जब विकास होगा तो वहाँ सुख का साम्राज्य होगा। यह प्रक्रिया बिल्कुल सरल और सहज है, जिसके जरिए हम यह जान और पहचान सकते हैं। वर्तमान समय अशान्ति और दुःख के भयानक दौर से गुजर रहा है। ऐसे में जरूरत है कि हम अपने धर्म और शास्त्र सत्य को स्वीकारते हुए शान्ति के सागर परमात्मा से अपने तार जोड़े ताकि हमारे भीतर शान्ति का खजाना मिले इससे हमारे अन्दर शान्ति तो आयेगी ही साथ ही हम दूसरों को भी शान्ति प्रदान कर सकेंगे।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

ध्यानवस्था में आत्मास्वरूप को देह से अलग करो और क्रमशः उसे आकाश, हवा, अग्नि, पानी, पृथ्वी की परीक्षा में से निकलते हुए देखो। कल्पना करो कि मेरी दहे की बाधा हट गई है और अब मैं स्वतंत्र हो गया हूँ। अब तुम आकाश में इच्छापूर्वक ऊँचे नीचे पखेरुओं की तरह जहाँ चाहे उड़ सकते हो। हवा के वगे से गति में कुछ भी बाधा नहीं पड़ती और न उसके द्वारा जीव कुछ सुखता ही है। कल्पना करो कि बड़ी आग की ज्वाला जल रही है और तुम उसमें होकर मजे में निकल जाते हो और कछु भी कष्ट नहीं होता है। भला जीव को आग कैसे जला सकती है, उसकी गर्मी की पहचुं तो सिर्फ शरीर तक ही थी। इसी प्रकार पानी और पृथ्वी के भीतर भी जीव की पहचुं वैसे ही है जैसे आकाश में अर्थात् कोई भी तत्व तुम्हें छू नहीं सकता और तुम्हारी स्वतन्त्रता में तनिक भी बाधा नहीं पहुंचा सकता।

किसी भी धर्म में हिंसा और रक्त क्रान्ति की जगह नहीं है। गांधी जी अहिंसा के रास्ते पर चलकर महात्मा के नाम से जाने लगे। जिस समय देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था उस समय स्वामी विवेकानन्द प्रेरणा स्रोत बने गुलामी की कायर मानसिकता से उबारा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक आध्यात्मवाद सबसे बड़ा वेदांत है।

महात्मा बुद्ध ने अहिंसा और शिक्षा के दम वेदांत को घर-घर पहुँचाया। विश्व शान्ति को लेकर मानवीय दृष्टिकोण हम जब प्रातः जागते हैं और रेडियो सुनते हैं या समाचार पत्र पढ़ते हैं। तो हमारा सामना उन्हीं दुःखद समाचारों से होता है। जो हिंसा, अपराध, युद्ध से परिपूर्ण हो। आज के इस आधुनिक युग में भी यह बात स्पष्ट है कि किसी का भी मूल्यवान जीवन सुरक्षित नहीं है। किसी भी पूर्व पीढ़ी को इतने बुरे समाचारों का सामना नहीं करना पड़ा है। जिनका सामना हम कर रहे हैं भय और तनाव की यह सतत् अनुभूति किसी भी संवेदनशील और करुणाशील व्यक्ति को हमारे आधुनिक विश्व के विकास को लेकर गंभीरता से पक्ष उठाने पर विवश करना चाहिए। यह विडम्बना है कि अधिक गंभीर समस्याएं औद्योगिक रूप से अधिक विकसित समाजों से आती हैं। विज्ञान और तकनीक ने कई क्षेत्रों में चमत्कारिक कार्य किये हैं। पर मनुष्य की मूलभूत समस्याएं बनी हुई हैं अभूतपूर्ण साक्षरता है पर फिर भी लगता नहीं कि इस वैश्विक शिक्षा ने अच्छाई को बढ़ावा दिया हो अपितु इसके स्थान पर केवल मानसिक अशान्ति और असंतोष की बढ़त हुई है। हमारे भौतिक विकास और तकनीक में बढ़त को लेकर कोई संदेह नहीं पर फिर भी यह पर्याप्त नहीं है। क्योंकि अभी तक हम शान्ति और सुख लाने में या पीड़ाओं पर काबू पाने में सफल नहीं हुए हैं। हम केवल निष्कर्ष निकाल सकते हैं। कि हमारे उन्नति तथा विकास में कोई गंभीर चूक हुई और यदि हमने समय रहते उसे रोका नहीं तो मानवता के भविष्य के लिए उसके विनाशकारी परिणाम होंगे। मैं विज्ञान और तकनीक के विरोध में बिल्कुल भी नहीं हूँ। उन्होंने मानवता के समय अनुभव हमारे भौतिक सुख तथा कल्याण में और जिस विश्व में हम रह रहे हैं। उसके अधिक समय में बहुत अधिक सहाय्य दिया है। पर यदि हम विज्ञान और तकनीक पर बहुत अधिक बल देता हमारा मानवीय ज्ञान और समझ के उन अंगों से संपर्क टूटने का खतरा है। जो ईमानदारी और परोपकार की ओर प्रेरित करें विज्ञान और तकनीक में यद्यपि अनगिनत भौतिक सुख उपलब्ध कराने की क्षमता है, पर यह हमारे सदियों पुराने आध्यात्मिक तथा मानवीय मूल्यों का स्थान नहीं ले सकते जिन्होंने विश्व सभ्यता को उनके सभी राष्ट्रीय रूप में जैसा हम जानते हैं एक व्यापक आकार दिया है। कोई भी विज्ञान के अभूतपूर्वक भौतिक लाभ को नकारा नहीं सकता पर हमारी आधारभूत मानवीय समस्याएँ बनी हुई हैं। हम अभी भी उन्हीं का सामना कर रहे हैं। यदि और अधिक नहीं तो दुःख भय तथा तनाव। इसलिए यह तर्कोचित ही है कि एक ओर भौतिक विकास दूसरी ओर आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के बीच संतुलन साधा जाए। इस समन्वय को लाने के लिए हमें अपनी मानवीय मूल्यों को पुनर्जीवित करना होगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कई लोग आज के वैश्विक नैतिक संकट को लेकर मेरी चिन्ता से सहमति रखते हैं और सभी मानवतावादी और धर्म अभ्यासी भी जो हमारे समाज को अधिक करुणामय न्यायपूर्ण और एक समान बनाने को लेकर चिंतित हैं मेरे आग्रह से जुड़ेंगे।

यूनेस्को की ७०वीं वर्षगांठ

यूनेस्को की ७०वीं वर्षगांठ मुझे इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि का स्मरण कराती हैं मानवीय इतिहास में पहली बार हमारे पास समूचे विश्व के

शेष पृष्ठ ७ पर

प्रेरक प्रसंग

बड़ा डाकू कौन?

- महेन्द्र आर्य

यह उस समय की बात है जब महान् कहलाने वाले सिकन्दर की सेनाएं दिग्विजय करती हुई सारे विश्व को मैसीदोनिया के आधिपत्य में लाने का प्रयत्न कर रही थी। ठीक उसी समय एक नाविक ने सिकन्दर को अपनी निर्भीकता से आश्चर्य चकित कर दिया।

उस नाविक का नाम था द्योमेदस। अपनी एक लम्बी सी नाव पर बैठ कर वह कुछ यात्रियों में जहाजों पर छापा मार कर उनको लूट लिया करता था। एक दिन अचानक वह पकड़ लिया गया और उसे अपराधी के रूप में सिकन्दर के सम्मुख उपस्थित किया गया।

सिकन्दर ने जब उसके विषय में सुना तो उसने उस नाविक पर क्रोध व्यक्त करते हुए कहा—“तुम्हारा यह कार्य न केवल अपराध है अपितु पाप भी है। दूसरों को चोरी से लूट लेना अच्छा नहीं कहा जा सकता। मेरे राज्य में तुमने समुद्र की शान्ति भंग करने का साहस किस प्रकार किया? तुम्हें बड़े से बड़ा दण्ड मिलना चाहिए। तुम डाकू हो।”

जितने क्रोध में सिकन्दर ने उसको दण्ड सुनाया था उतनी ही निर्भीकता से उस नाविक ने उसको उत्तर देते हुए कहा—“आपको ऐसी बात कहते लज्जा नहीं आती? मुझ से कहीं बड़े डाकू तो आप हैं। मैं तो एक छोटी सी नाव का अधिपति हूँ और कभी-कभी पेट पालने के लिए लोगों को लूट लेता हूँ। मुझ से कम हानि होती है पर आत तो बड़े जहाजी बेड़ों के मालिक है, रात-दिन इस विशाल धरती पर असंख्य प्राणियों को मृत्यु के घाट उतार कर धन-जन का संहार करते हैं। आपने बड़े-बड़े देशों को लूटा है, कितनी महान् क्षति होती है आपके द्वारा। हम दोनों में केवल इतना ही अन्तर है कि मैं छोटा डाकू हूँ तो आप बड़े डाकू हैं। यदि भाग्य मेरा साथ दे तो मैं भी आप से बड़ा डाकू हो सकता हूँ।”

इस प्रकार द्योमेदस ने सिकन्दर की आलोचना की। सिकन्दर उसकी निर्भीकता और सत्य के विश्लेषण से बहुत प्रभावित हुआ। इसका अभिप्राय यह नहीं कि उससे प्रभावित होकर उसने लूट-पाट बन्द करने का निश्चय किया हो। नहीं, ऐसा नहीं, अपितु बस केवल इतना ही कि जो सिकन्दर डाकू द्योमेदस को महान् दण्ड देने की सोच रहा था उसने उसको क्षमा करके उसे अत्यन्त योग्य व्यक्ति समझ कर उसको अपने एक बड़े राज्य का अधिपत्य सौंप दिया। इससे डाकू का अपना पेशा तो छूट गया किन्तु सिकन्दर तो अपने पथ पर बढ़ता ही चला गया था।

पृष्ठ ६ का शेष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक...

लिए एक संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ है। मैं युनेस्को के लिए महात्मा गांधी के संदेश को स्मरण करता हूँ जिसमें उन्होंने स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति के तत्काल कदम उठाए जाने का आग्रह किया था। और इसके बाद यूनेस्को के प्रारंभिक वर्षों में अपने देश के राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन के नेतृत्व का भी स्मरण करता हूँ। 70वीं वर्षगांठ हमारे अब तक की उल्लेखनीय यात्रा के आयोजन का अवसर है। यह उस बुद्धिमत्ता के साथ आगे देखने का अवसर भी है जो हमें समय और अनुभव से प्राप्त हुई है हम संयुक्त राष्ट्र में जो कुछ भी हासिल करने की कामना करते हैं उसमें सदैव यूनेस्को भूमिका निभाता रहेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी के आदर्शों एवं विचारों को विश्वव्यापी मान्यता प्रदान की अहिंसा की नीति के जरिये विश्व भर में शान्ति के संदेशों को बढ़ावा देने के महात्मा गांधी में योगदान को स्वीकारने के लिए ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में विश्व भर में प्रतिवर्ष मनाने का निर्णय वर्ष 2007 में लिया गया। मौजूदा विश्व व्यवस्था में अहिंसा की सार्थकता को मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में भारत द्वारा रखे गये प्रस्ताव को बिना वोटिंग के ही सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। महासभा के कुल 191 सदस्य देशों में 140 से भी ज्यादा देशों ने इस प्रस्ताव को सह प्रायोजित किया। इस प्रस्ताव को भारी संख्या में सदस्य देशों का समर्थन मिलना विश्व में आज भी गांधी जी के प्रति सम्मान और उनके विश्वव्यापी विचारों और सिद्धान्तों की नीति की प्रासंगिकता को दर्शाता है। महात्मा गांधी ने कहा कि जो बदलाव आप विश्व में देखना चाहते हैं। उसकी शुरुआत स्वयं अपने से करनी होगी। यदि हमें पूरे विश्व में शान्ति स्थापित करनी है तो हमें भारतीय मूल्यों को शिक्षा में समाहित करना होगा। आज सम्पूर्ण विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता शान्ति शिक्षा है। जिससे मानव का जीवन सुखमय हो सके। संदर्भ ग्रन्थ सूची

- नीतिशतक भर्तृहरि
- ऋग्वेद
- ईश्वर कृष्ण साखं यकारिका
- मीडिया रिपोर्ट
- यूनूस्को रिपोर्ट
- रमन बिहारीलाल समकालीन भारत और शिक्षा
- एन०सी०ई०आर०टी० रिपोर्ट
- एन०सी०एफ० रिपोर्ट 2005

श्रीमती चन्द्रावती कन्या गुरुकुल संस्कृत विद्यापीठ का शिलान्यास विधिवत् सम्पन्न

दिनांक २६ सित० २०१७ को श्रीमती कन्या गुरुकुल संस्कृत विद्यापीठ प्रहलादपुर सोरों का शिलान्यास विधिवत् सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज की आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा के ब्रह्मत्व में यज्ञ के माध्यम से हुआ। तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण किया और ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला। पश्चात् शिलान्यास की ओ३म् लिखित ईंटे स्वामी आर्यवेश जी, श्री सुनील कुमार सिंह जनपद कासगंज के पुलिस अधीक्षक, श्री देवराज शास्त्री, अधिष्ठाता आर्ष गुरुकुल एटा व आचार्या सूर्यादेवी जी आदि ने रखी। इसी बीच आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियों ने स्वागत गीत व महर्षि दयानन्द पर गीतों की प्रस्तुति दी। सभी ने भूमिदानदाता श्री देवराज आर्य व उनके भतीजों की प्रशंसा की।

गुरुकुल की अधिष्ठात्री आचार्या डॉ० धारण याज्ञिकी ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित विशाल जनसमूह का आभार व्यक्त किया। शान्तपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संयोजक— लोकेन्द्र देव आर्य

कन्या गुरुकुल मातृ मन्दिर रामापुरा लक्सा का एक दिवसीय वेद प्रचार

(वाराणसी), अक्टूबर। मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल रामापुरा लक्सा का वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। समारोह में छात्र/छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन कर सबरा मन मोह लिया।

१५ अक्टूबर को आयोजित वार्षिकोत्सव में कार्यक्रम की धूम रही। इसमें प्रमुख रूप से स्वामी राजेन्द्र सरस्वती, अजीत आर्य—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी, राजेश राय, आदि मौजूद रहे।

गुरु और शिष्य

गुरु ने शिष्य से कहा- गुरुदेव! एक व्यक्ति ने आश्रम के लिए गाय भेंट की है। गुरु ने कहा- अच्छा हुआ, दूध पीने को मिलेगा। एक सप्ताह बाद शिष्य ने आकर गुरु से कहा- गुरुजी! जिस व्यक्ति ने गाय दी थी, वह अपनी गाय वापिस ले गया। गुरु ने कहा- अच्छा हुआ। गोबर उठाने की झंझट से मुक्ति मिली। ऐसा व्यक्ति जो हर हाल में राजी हो उसे कोई दुख कभी दुःखी नहीं कर सकता। 'परिस्थिति' बदले तो अपनी 'मनःस्थिति' बदल लो। बस दुःख, सुख में बदल जायेगा। सुख दुःख आखिर मन के ही तो समीकरण है। आपकी दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए।


आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२६३२८
का० प्रधान- ०६४९२७४४३४९, मंत्री- ०६८३७४०२९६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा की कुछ झलकियां



आर्य समाज धामपुर बिजनौर कार्यक्रम में भाग लेते सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह



आर्य समाज धामपुर बिजनौर कार्यक्रम में भाग लेते सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती



गजरौला में भीष्म जी आर्य के निवास पर पारायण यज्ञ कराते हुए सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती



गजरौला में भीष्म जी आर्य के निवास पर पारायण यज्ञ कराते हुए सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती



मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल रामपुरा लखी के वार्षिकोत्सव का एक दृश्य



आर्य समाज ललितपुर (झांसी) में वेद प्रचार समारोह का एक दृश्य

आर्य समाज बुढ़ाना का कार्यकर्ता सम्मेलन एवं पारायण यज्ञ 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक

आर्य समाज बुढ़ाना एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर का कार्यकर्ता सम्मेलन एवं पारायण यज्ञ २५ अक्टूबर से २८ अक्टूबर तक होगा।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक एवं वेदपाठी अचार्या श्रुति शास्त्री, एवं आचार्या स्मृति शास्त्री होंगी।

प्रदेश की सभी आर्य समाज एवं आर्य महानुभाव से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पारायण यज्ञ एवं कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

निवेदक

अरविन्द कुमार

मंत्री- आर्य समाज बुढ़ाना, जिला-मुजफ्फर नगर

भूल सुधार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के साप्ताहिक मुख पत्र "आर्य मित्र" के अंक ३५ दिनांक २६ सितम्बर, २०१७ के पृष्ठ ६ पर भूल से संस्था के अभिलेखों के विरुद्ध चुनाव प्रकाशित हो गया था, जिसमें संशोधित करते हुए आर्य समाज (वेद मन्दिर) गोविन्दनगर, कानपुर से निर्वाचित एवं मान्यता प्राप्त पदाधिकारियों के निम्नवत् प्रकाशित नाम पड़े जाये-

श्री रणधीर सिंह (प्रधान), श्री जयदेव सिंह (मंत्री), श्री आनन्द गुप्ता (कोषाध्यक्ष)

महिला आर्य समाज (वेद मन्दिर) गोविन्द नगर, कानपुर

श्रीमती नौरंग सिंह (प्रधान), श्रीमती रंजना सचान (मंत्री), श्रीमती सुमित्रा चौधरी (कोषाध्यक्ष)

सभा मंत्री

सुख-दुःख की दार्शनिक-मीमांसा

'सुख-दुःख की दार्शनिक-मीमांसा' पुस्तक से साभार

प्रश्न उठता है कि वास्तविक सुख पदार्थ एक है या संख्या संख्या में दो हैं, पर दो हो नहीं सकते। उसके साथ यह भी प्रश्न उठता है कि दुःख प्रकृति के संसर्ग से उत्पन्न होने वाला वास्तविक सुख नहीं हो सकता है। वरन् यह सुखाभास ही ठहरता है। इसी प्रकार श्रेयो मार्ग के उपासक मुमुक्षु के लिए उसके साधन-पालन में जो दुःखानुभूति है वह भी दुःखाभास है। कारण यह है कि प्रकृति या परमेश्वर में दुःख या सुख दो विरोधी गुण स्वाभाविक रूप से साथ नहीं रह सकते हैं।

'सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार' पुस्तक के सम्मान्य लेखक का कथन है कि उत्पत्ति और विनाश होने से प्राकृतिक सुख अनित्य है तथा यह सुख प्रकृति का गुण है और कार्य पदार्थों का भी तो इससे प्रकृतिगत सुख नित्य और कार्य पदार्थगत सुख

अनित्य ठहरता है, क्योंकि वह सुख जगदुत्पत्ति से पूर्व भी था और विनाश होने के बाद भी रहेगा। फलतः इस सुख को नित्यगत और अनित्यगत (कार्य में) कहना पड़ेगा।

आदरास्पद-लेखक यह कह सकता है कि जीवात्मा तो कार्यगत पदार्थों का विषय ही नहीं रह जाता। अतः उसकी नित्यता की चर्चा हयां नहीं की गई। तब प्रश्न यह है कि प्रकृति (सत्त्व गुण) के अनुद्भूत सुख की तो अनुभूति हो ही नहीं सकती, पर कार्य रूप में भी वह सुख उद्भूत होकर बाह्य इन्द्रियों से ग्राह्य क्यों नहीं होता? जैसे नासिका से गन्ध, जिह्वा से रस, त्वचा से स्पर्श और श्रोत्र से शब्द ग्रहण होता है। पक्षधर यह भी कह सकता है कि पंचेन्द्रिय द्वारा न सही, मन भी तो इन्द्रिय है। उसके द्वारा कार्य पदार्थों के सम्पर्क से सुखानुभूति हो जाती है। तो विचारणीय

यह है कि इस सुखानुभूति के लिए कोई कार्य पदार्थ निश्चित तो है नहीं कि अमुक के द्वारा सुखानुभूति होगी और अमुक के द्वारा नहीं, क्योंकि हम देखते हैं जो पदार्थ किसी को मनोवृत्ति की स्वस्थावस्था अर्थात् उस पदार्थ के प्रति रोगावस्था में सुखदायी प्रतीत होते हैं, वे ही पदार्थ अस्वस्थ व अमनस्कता में वैसे प्रतीत नहीं होते, अथवा दुःखदायी प्रतीत होते हैं। फलतः सुख तथा दुःख का लवलेश भी नहीं होता, क्योंकि सुख के भण्डार प्रभु तो जीवात्मा के बाहर और भीतर स्थित हैं। अन्तर में अन्तःकरण के शान्त होने या निर्मल होने पर बाह्य (प्रकृति)कार्य पदार्थों के संसर्ग में दुःख ही दुःख है और निर्लेप जीवात्मा में सुखानुभव ही है। निष्कर्ष यह है कि प्राकृतिक उपासना का आरम्भ और परिणाम दोनों दुःखदायी है और अप्राकृतिक दिव्य प्रभु की उपासना का आरम्भ और परिणाम दोनों दुःखदायी हैं।

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।